प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कृषकों की आय बढ़ाने हेतु २१-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ

पंतनगर। २२ नवम्बर २०१७। जिस समय हमारा देश आजाद हुआ था, तब खाद्यान्न का उत्पादन इतना कम था कि देश की जनता को पेट भरने के लिए भी पर्याप्त नहीं था परन्तु कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अनुसंधान द्वारा अब हमारे देश में खाद्यान्न की स्थिति यह है कि हम न सिर्फ अपना बल्कि निर्यात द्वारा अन्य देश के लोगों का भी पेट भरने में सक्षम हैं। यह सम्भव हो पाया है कृषि में समुचित निवेश एवं कृषि उत्पादों के समुचित मूल्य निर्धारण द्वारा। वर्ष १९६५ से लेकर २०१७ तक देश की जनसंख्या कई गुना बढ़ चुकी है और साथ ही खाद्यान्न उत्पादन भी, परन्तु किसानों की आय में उतनी बढ़ोत्तरी नहीं हो पाई है और कृषि में कार्यरत लगभग २२ प्रतिशत लोग अभी भी गरीबी रेखा के नीचे रह रहे हैं। इसका कारण है कृषि उत्पादन और किसानों की आय के बीच में तालमेल का अभाव, परिवारों में बंटवारे के कारण किसानों की भूमि निरन्तर बटती जा रही है। अतः परिवार की कुल आय भी विभाजित हो रही है। वर्ष २०२२-२३ तक किसानों की आय दोगुना करने को लेकर वैज्ञानिक व सरकार सभी कार्यरत हैं, जिसके लिए आवश्यक है कि जिन फसलों में हमारे देश का औसत उत्पादन विश्व के औसत उत्पादन से कम है उन फसलों की उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास किया जाय, ऐसी प्रजातियाँ विकसित की जायें जो कि बदलती आबोहवा में भी अच्छा उत्पादन दे सकें और सबसे ज्यादा जरूरी है कि फसल उत्पादन से पहले व बाद में फसल सुरक्षा पर ध्यान दिया जाय एवं कृषि के साथ-साथ कृषि विविधीकरण पर ध्यान दिया जाये जिसका मतलब है कि कृषि के साथ-साथ पशुपालन, मसाले व जड़ी-बूटी का उत्पादन, गन्ना एवं मशरूम उत्पादन आदि का समावेश करने और अन्ततः किसानों की आय को दोगुना करने का प्रयास सफल हो सके। यह कहना है कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता, डा. जे. कुमार का जो महाविद्यालय के उच्च संकाय प्रशिक्षण केन्द्र, पादप रोग विज्ञान विभाग के सभागार में आयोजित ३५वें २१ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'कृषकों की आय बढ़ाने के लिए कृषि एवं औद्यानिक फसलों में फसल के दौरान व फसलोपरान्त होने वाली हानि को कम करने हेतु तकनीकी' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर बतौर अध्यक्ष बोल रहे थे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में विभागाध्यक्ष एवं निदेशक, उच्च संकाय प्रशिक्षण केन्द्र, डा. के.पी. सिंह, ने सभी प्रशिक्षणार्थियों एवं अतिथियों का स्वागत किया एवं विभाग की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को अवगत कराते हुए विभाग के स्वर्णिम इतिहास में पूर्व वैज्ञानिकों डा. वाई.एल. नेने एवं आर.एस. सिंह के योगदान के बारे में बताया। डा. सिंह ने कहा कि किसानों की आय को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि फसल उत्पादन के दौरान उनमें लगने वाले रोग एवं कीट का समुचित निदान किया जाए एवं फसलोपरान्त उनकी समुचित देखभाल की जाए। अतः प्रस्तुत प्रशिक्षण कार्यक्रम समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यथोचित है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के ८ राज्यों से २० प्रशिक्षणार्थी प्रतिभाग कर रहे हैं। कार्यक्रम में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष एवं पादप रोग विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम समन्वयक एवं प्राध्यापक, डा. योगेंद्र सिंह ने कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

उद्घाटन सत्र में वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते जे. कुमार, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय।